## आपदा का पाठ

मिली क्या बुद्धि थोड़ी सी नियामक समझते निज को
स्वयं को मानते अधिपति नरेतर भोग्य सब जग को
करें कैसे त्वरित संचित अरे निखिला धरा का धन
बने हर जीव कैसे मात्र मेरे लक्ष्य का साधन ।।

यही बस शोध्य है विज्ञान का कैसे बढ़े वपु सुख
नहीं कुछ अर्थ रखते इतर जन के प्राण या बहुदुख
करेगा जंतु का समुदाय जग में क्या अधिक जी कर
बढ़ाना शक्ति बस अभिप्रेत है नर रक्त भी पीकर ।।

बनूं कैसे निवेशित बुद्धि धरणी का नियंता मैं
भले जग में कहाऊं परम पीड़क आत्महंता मैं
सकल स्वामित्व की मदिरा बहुत ही मोहकारी है
नहीं क्या मात्र नरमति से मनुज की भूति हारी है ।।

अभी तो विकृति का विस्तार दर्शित मात्र थोड़ा है
अभी तो प्रथम शर क्षय का तुम्हारी ओर छोड़ा है
यहां तूणीर में हैं अनगिनत शर और भी घातक
महत उद्देश्य मेरा देखना क्या पुण्य या पातक ।।

धरा ही मम प्रयोगों की बने विस्तृत महाशाला
लगे फिर अर्थतंत्रों में भले चिरकाल को ताला
न शव को प्राप्त हो अंतिम क्रिया भी मुझे इससे क्या
न आत्मीय देख पाएं अंत को इससे मुझे है क्या ।।

न परकृत पाप का प्राणी यहां पर भोगता फल है
हुआ क्या कर्मफल सिद्धांत ही दृढ़ आज निष्फल है
महा इस भीषिका में भी जिन्हें बस दीखता धन है

निपट नर यंत्र है या शेष उनके पास भी मन है ।।

समय विपरीत आता फिर नहीं नर की यहां चलती

स्वयं की शक्तिमत्ता पर मनुजता पर यहां छलती

प्रकृति की सूक्ष्मता भी सकल जग को पराजित करती

यहां असहाय सी नरता बिलखती नित्य है मरती ।।

रहे तुम गेह में कुछ दिन अक्रिय होकर यही शुभतर

प्रकृति का रूप निखरा इस अवधि में ही अधिक प्रियतर

मनुज के कार्य ही सबसे बड़े दूषण जगत में हैं

धरा के जंतु बहु क्रीड़ानिरत प्रेषित विगत में हैं ।।

दिखा देगी प्रकृति तुमको कि तुम भी जीव भूवासी

बनो मत तुम स्वघोषित इस जगत के एक अधिशासी

नहीं हैं मानते जग के नियम नरदत्त परिभाषा

नहीं तुमसे रही जगदीश को जगभूति की आशा ।।

नहीं पर एक विपदा से मनुज अवबोध है संभव

अभी हैं झेलने मानी मनुज को और भी परिभव

अभी भी आत्मनिष्ठा से भरी सी मनुज की मति है

अभी भी अल्प उसको भासती भव की महाक्षति है ।।

दिनांक : 22/05/2020

पं. शिव कुमार मिश्र